

ISSN : 2395-4132

THE EXPRESSION

An International Multidisciplinary e-Journal

Bimonthly Refereed & Indexed Open Access e-Journal



Impact Factor 3.9

Vol. 6 Issue 3 June 2020

Editor-in-Chief : Dr. Bijender Singh

Email : editor@expressionjournal.com

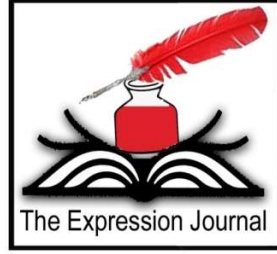
www.expressionjournal.com

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132



प्राचीन भारतीय परंपरा में मानव जीवन मूल्य के महत्व का विश्लेषणात्मक वर्णन: वर्तमान "करोना काल" के अवसादग्रस्त चक्र को उत्साह चक्र में बदलने के विशेष सन्दर्भ में

डा० प्रतिभा मिश्रा

सहायक प्रवक्ता एवं अध्यक्ष—हिन्दी विभाग

सत्यपाल सिंह (पी.जी) महाविद्यालय, नवादा इन्देपुर, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

Abstract

प्राचीन भारतीय परंपरा में मानव जीवन मूल्य का सदा से ही विशेष स्थान रहा है। यहाँ मूल्य का शाब्दिक अर्थ है—महत्ता। इस परिपेक्ष्य में मानव जीवन मूल्य का अर्थ मानव जीवन की महत्ता से लगाया जा सकता है। मानव मूल्यों के अन्तर्गत नैतिकता, सदाचार, सत्यवादिता, अहिंसा, अस्तेय आदि सिद्धान्त एवं व्यवहार आते हैं परन्तु इनमें भी सर्वप्रथम है मानव जीवन को सुरक्षित, महत्वपूर्ण एवं उन्नतशील बनाना, क्योंकि जब मानव जीवन का महत्व होगा तभी मानव जीवन में अपनाये जाने वाले सिद्धान्तों का महत्व होगा। इसके लिये यह आवश्यक है कि मानव जाति स्वयं को पहचाने तथा अपने मूल्यवान जीवन के महत्व को जानें। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से भारतीय परंपराओं के परिपेक्ष्य में मानव जीवन मूल्य को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है।

Key-Words

मानव जीवन मूल्य, मानवतावाद, संक्रामक काल, आवसादग्रस्त, पारम्परिक मूल्य, प्राचीनता, नवीनता, सार्थकता, परिपेक्ष्य, सानिध्य, कर्तव्य



प्राचीन भारतीय परंपरा में मानव जीवन मूल्य के महत्व का विश्लेषणात्मक वर्णन: वर्तमान “करोना काल” के अवसादग्रस्त चक्र को उत्साह चक्र में बदलने के विशेष सन्दर्भ में

डा० प्रतिभा मिश्रा

सहायक प्रवक्ता एवं अध्यक्ष—हिन्दी विभाग

सत्यपाल सिंह (पी.जी) महाविद्यालय, नवादा इन्देपुर, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

शोध पत्र

मानव जीवन मूल्य का अर्थ है, मानव जीवन को महत्ता एवं प्रमुखता प्रदान करना, जब तक मनुष्य स्वयं से परिचित होकर मानव जीवन का महत्व एवं जीवन की दुर्लभता को नहीं समझेगा तब तक मानव जीवन की सार्थकता संपूर्ण नहीं कही जा सकती। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारतीय परंपरा के अन्तर्गत शास्त्रों से संकलित श्लोकों के आधार पर मानव जीवन मूल्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है जोकि मानव जीवन मूल्य की महत्ता को सिद्ध करने में प्रमुख सूत्रों की भूमिका निभाते हैं। इनका वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है—

1. योगक्षेमं ब्रह्मम्यहम

(श्रीमद् भगवद्गीता)

“योग” अर्थात् संधि अर्थात् आत्मा से परमात्मा के साथ संधि और भगवत् प्राप्ति के निमित्त किये हुये साधनों की रक्षा का नाम “क्षेम” है।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

श्री कृष्ण जी कहते हैं, कि जो अनन्यभाव से मेरे में स्थित हुये भक्तजन मुझ परमेश्वर को निरन्तर चिन्तन करते हुये निष्काम भाव से भजते हैं, उन नित्य एकीभाव से मेरे में स्थित वाले पुरुषों का योगक्षेम मैं स्वयं प्राप्त कर लेता है।

अर्थात् निष्काम भाव से ईश्वर में समर्पित होकर कर्म करना ही मनुष्य का एकमात्र कर्तव्य है, परिणाम को ईश्वर का प्रसाद मानकर अच्छा एवं बुरा, समभाव से स्वीकार करना चाहिये।

अप्राप्त की प्राप्ति का नाम योग तथा प्राप्त वस्तु की रक्षा का नाम क्षेम है।

अतः निष्काम कर्म के द्वारा, भक्ति अथवा तपस्या के द्वारा ईश्वर से सानिध्य योग तथा ईश्वर के दिये दुर्लभ मानव जीवन की रक्षा ही क्षेम है।

अतः मनुष्य को स्वयं तथा संपूर्ण मानव जाति के जीवन को बहुमूल्य मानकर इसकी रक्षा एवं संवर्धन के उपायों तथा ईश्वर प्राप्ति में संलग्न रहना ही “योगक्षेम बह्यम्यहम्” है, इसी में मानव जाति का कल्याण निहित है।

2. प्रज्ञा प्रतिष्ठिता

जिस प्रकार कच्छप (कछुआ), विपदा का आभास होने पर अपने अंगों को समेट लेता है, उसी प्रकार यदि मनुष्य विशेषतः, आपातकाल में सब ओर से अपनी इन्द्रियों को, इन्द्रियों के विषयों से समेट लें तथा स्थिर बुद्धि का अनुसरण करे तो बड़े से बड़े आपात काल में भी हंसते हुये पार पा सकता है।

श्री कृष्ण जी कहते हैं, कि मनुष्य को चाहिये कि वह संपूर्ण इन्द्रियों को वश में करके समाहित चित्त हुआ मेरे परायण स्थित होवे, क्योंकि जिस मनुष्य की इन्द्रियां वश में होती हैं, उसकी ही बुद्धि स्थिर होती है।

इस प्रकार “प्रज्ञा प्रतिष्ठिता” मानव जीवन मूल्य को सिद्ध करने का एक महत्वपूर्ण सूत्र है, मनुष्य स्वयं को वश में करके जीवन मूल्य के महत्व का आंकलन कर जीवन को श्रेष्ठतम बना सकता है।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

जिस प्रकार सब ओर से परिपूर्ण अचल प्रतिष्ठा वाले समुद्र के प्रति नाना नदियों के जल उसको (समुद्र को) चलायमान न करते हुये, उसमें ही समा जाते हैं।, उसी प्रकार स्थिर बुद्धि मनुष्यों (जिसकी सब इन्द्रियां वश में हों) के प्रति संपूर्ण भोग किसी भी प्रकार का विकार उत्पन्न किये बिना ही उसमें समा जाते हैं। (अर्थात् वह सम्पूर्ण भोगों को उनसे विरक्त होते हुये भी भोगता है) तथा वह मनुष्य परम शान्ति को प्राप्त होता है न कि भोगों की लालसा रखने वाला मनुष्य (ऐसा प्राणी) अपनी इन्द्रियों के वश में रहने वाला मनुष्य सदा भोग की लालसा में व्यथित ही रहता है और अंत में अवसादग्रस्त होकर अपने जीवन मूल्य के महत्व को भुला बैठता है।

अतः किसी भी आपदा अथवा अवसाद से बचने के लिये तथा जीवन को उत्कर्ष एवं गुरुतम बनाने के लिये मनुष्य का “प्रज्ञा प्रतिष्ठित” होना अति आवश्यक है।

3. येन बद्धो बलिः राजा दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वामनुबंध्यामि रक्षे मा चल मा चल॥

प्राचीन भारतीय परंपरा में मनोवैज्ञानिकता का पटु भी निहित है, जिससे मनुष्य के जीवन में सकारात्मकता आती है तथा कतिपय परिस्थितियों में यदि उसका मनोबल डगमगा भी रहा हो तो इन परंपराओं के सूत्र मनुष्य के मनोबल को मजबूत करके उन्हें पुनः पूर्व तेज प्राप्त करने में सहयोग प्रदान करते हैं।

इसी परंपरा सूत्र का निर्वाहन करता है उपरोक्त “रक्षा सूत्र”, जिसे प्रत्येक धार्मिक अवसर पर पुरोहित के द्वारा अथवा घर के किसी वरिष्ठ व्यक्ति के द्वारा सभी बच्चे, बूढ़े, युवा एवं स्त्रियों की कलाई पर बांधा जाता है, इसका उद्देश्य जीवन में सकारात्मकता तथा जीवन की रक्षा करना है। यह आस्था, श्रद्धा एवं विश्वास का ही समन्वित रूप है कि भारत वर्ष में प्रत्येक मनुष्य “रक्षा सूत्र” बंधवाकर बड़ी से बड़ी कठिनाई का सामना करने के लिये स्वयं को सामर्थ्यवान पाता है, भले ही परिस्थितियां कितनी ही विपरीत हों परन्तु रक्षा सूत्र की मनोवैज्ञानिक सकारात्मकता में मनुष्य अवसादग्रस्त नहीं होता तथा कठिन समय को भी सहर्ष व्यतीत कर जीवन को नवीन सिद्धियों की ओर उन्मुख करता है।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

उपरोक्त रक्षासूत्र का शब्दार्थ इस प्रकार है—पुरोहित रक्षा सूत्र बंधवाने वाले यजमान से कहता है, जिस रक्षा सूत्र से दानवों के महा पराक्रमी राजा “बलि” धर्म के बंधन में बांधे गये थे अर्थात् धर्म में प्रयुक्त किये गये थे, उसी सूत्र में मैं तुम्हें बांधता हूँ अर्थात् धर्म के लिये प्रतिबद्ध करता हूँ।

इसके बाद पुरोहित रक्षा सूत्र से कहता है कि—

हे रक्षे ! हे रक्षा सूत्र, तुम स्थिर रहना, स्थिर रहना अर्थात् चलायमान न होना, चलायमान न होना।

इस प्रकार रक्षासूत्र बांधने का मनोवैज्ञानिक उद्देश्य मनुष्य में सकारात्मकता का भाव जगाना तथा उसे धर्म के लिये प्रेरित एवं प्रयुक्त करना है, जिसमें उसे जीवन मूल्य का ज्ञान प्राप्त हो सकें तथा वह निर्भय होकर मानव कल्याण हित अपनी क्षमताओं का प्रयोग कर सकें।

यह रक्षाबन्धन राजा को पुरोहित द्वारा, यजमान को ब्राहमण के द्वारा, भाई को बहन के द्वारा और घर के वरिष्ठ सदस्य के द्वारा समस्त परिजनों के किया जाता है।

इस प्रकार उपरोक्त रक्षासूत्र में सबके सुख और कल्याण की भावना निहित है।

सूत्र का अर्थ धागा भी होता है और सिद्धांत या मंत्र भी। पुराणों में देवताओं अथवा ऋषियों के द्वारा जिस रक्षा सूत्र बांधने की बात कही गई है, वह मंत्र है, धागा उसका प्रतीक चिन्ह है।

4. चरैवेति चरैवेति

इस मंत्र का अर्थ है, नहीं रुकना, नहीं थकना सतत् चलना सतत् चलना जब तक लक्ष्य ना मिले नहीं रुकना नहीं थकना।

इस मंत्र का विस्तृत रूप से इस प्रकार समझाया जा सकता है—

चरैवेति चरैवेति

यही तो मन्त्र है अपना

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

नहीं रूकना, नहीं थकना

सतत् चलना, सतत् चलना

यहीं तो मन्त्र है अपना, शुभंकर मन्त्र है अपना ।।1।।

हमारी प्रेरणा भास्कर है जिनका रथ सतत् चलता

युगो से कार्यरत है जो सनातन है प्रबल ऊर्जा ।

गति मेरा धरम है जो, भ्रमण करना—भ्रमण करना

यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना ।।2।।

चरैवेति चरैवेति यही तो मन्त्र है अपना

हमारी प्रेरणा माधव है जिनके मार्ग पर चलना

सभी जन सहोदर है, ये जन जन को सभी कहना

स्मरण उनका करेंगे और समय दें अधिक जीवन का

यहीं तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना ।।3।।

चरैवेति चरैवेति यही तो मन्त्र है अपना

हमारी प्रेरणा भारत है भूमि की करें पूजा,

सुजला सुफला सदा स्नेहः यही तो रूप है उसका,

जियें माता के कारण हम करें जीवन सफल अपना ।।4।।

यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना

चरैवेति चरैवेति यही तो मन्त्र है अपना

नहीं रूकना, नहीं थकना, सतत् चलना, सतत् चलना

यही तो मन्त्र है अपना शुभंकर मन्त्र है अपना

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

सतत् अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने से मस्तिष्क में नकारात्मक विचारों का अवकाश ही नहीं रहता।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी अंग्रेजों की गुलामी के संकटकाल में "रचनात्मक कार्यों" की ओर चलने का मन्त्र दिया था।

भारतीय ग्रामीण भाषा में भी एक कहावत है कि "बैठे से बेगार भली" यदि ऐसा समय आ भी जाये, जब आपके पास स्वयं का कोई रोजगार का साधन न हो, तो किसी दूसरे जरूरतमंद के कार्य में ही हाथ बंटा देना चाहिये, इससे भले ही आपको त्वरित लाभ कुछ न मिले परन्तु दूसरों की शुभकामनायें एवं स्वयं के अनुभव में वृद्धि का अवसर अवश्य प्राप्त होता है। जोकि भविष्य में कभी भी काम आ सकता है।

अतः खाली बैठकर अवसादग्रस्त होने के स्थान पर कुछ नया कार्य सीखना, दूसरों के काम में हाथ बंटाना अथवा भविष्य के लिये नई योजनायें बनाना जैसे कार्य करके समय के सदुपयोग द्वारा सकारात्मकता एवं उत्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है। सुअवसर प्रकट होने में देर नहीं लगती है। ऐसे में यदि कोई प्राणी खाली अवसादग्रस्त होकर बैठा होगा तो वह अपने जीवन के सुअवसर को गँवा देगा जोकि इसे सतत् कार्यरत् रहकर लक्ष्य तक ले जा सकता था।

5. कद व त्रन्द्रतं कद नृतं कद प्रज्ञा

ऋग्वेद

क्या उचित हैं क्या अनुचित यह निरन्तर विचारते रहो, अन्ध परंपरा को छोड़कर तर्क और विवेक का आश्रय ग्रहण करो।

6. अग्रे व्रत यते व्रतं चरिष्यामि

यजुर्वेद

धर्म की मर्यादाओं का पालन करो धर्म की मर्यादाओं का उल्लंघन दुखदायी है।

7. यद् भद्रम् तन्न आ सुव

यजुर्वेद

जो श्रेष्ठ है उसी को ग्रहण करो, जो बुरा है उसे छोड़ो, चाहें अपना हो या पराया।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

8. दैव्याय कर्मणे शुन्ध्यवम्

यर्जुवेद

पवित्र बनो और शुभ कर्म करो। शुभ कार्य करने वाले का जीवन पवित्र बनता है।

9. भूत्यै न प्रमदितव्यम्

तैत्तरीय उपनिषद्

शुभ कार्य में प्रमाद (आलस्य) नहीं करना चाहिये, ढील डालने से शुभ कार्य का अवसर निकल जाता है।

10. वसुधैव कुटुम्बकम्

इस मंत्र के अनुसार संपूर्ण बसुन्धरा (पृथ्वी) को अपना कुटुम्ब (परिवार) मानकर विश्व कल्याण के कार्य में संलग्न रहना तथा विश्व कल्याण में ही स्व कल्याण को निहित जानना।

11. यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता - मनुस्मृति

जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ साक्षात् देवता निवास करते हैं, अर्थात् ऐसे स्थान का वातावरण स्वर्ग के समान सुखदायक होता है। संसार में नर व नारी दोनों के ही जीवन मूल्य अर्थात् जीवन का महत्व समान है, परन्तु कतिपय जड़ बुद्धि प्राणियों ने नारी को भोग्या, मंदबुद्धि, कुचक्री, माया आदि संज्ञायें देकर समाज में दोयम दर्जे से भी बदतर स्थिति में ला खड़ा किया है।

इतिहास में किसी भी संकट के समय स्त्रियों ने पुरुषों से कंधे से कंधा मिला कर साथ दिया है तथा वर्तमान आपातकाल में भी स्त्रियां कठिन परिस्थितियों का सामना करने में पुरुषों से पीछे नहीं है।

एक प्रसन्न चित्त हंसती मुस्कुराती हुई नारी जिस घर में है, जिसे जीवन को जीने का आनन्द मिल रहा है, जिसकी श्वांस प्रेम से भरी है, जिसकी उपस्थिति समाज के लिये सम्मान का विषय है, ऐसी नारी जिस देश, जिस घर व काल के केन्द्र पर है, उस घर में एक नई सुवास, एक नया संगीत पैदा होता है तथा ऐसी नारी को सम्मानित व पूज्य दृष्टि से देखने वाले समाज का एक भी मनुष्य कभी अवसाद ग्रस्त नहीं हो सकता तथा वह जीवन में समृद्धि एवं उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहता है।

12. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु या कश्चिद् दुःखभाग भवेत् ।

“सर्वे भवन्तु सुखिनः” भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का आधार है। इसके अनुसार विश्व के सभी प्राणी सुखी हों, सभी स्वस्थ हों, सबका कल्याण हों, तथा सभी प्राणी “शुभता” को पहचान सकें। किसी प्राणी को कोई दुःखः न हो, इसका सर्वप्रमुख उदाहरण भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर गंगा को प्रवाहित करके विश्व कल्याण करना है, इसकार्य में उनके स्वयं के कल्याण के अतिरिक्त विश्व कल्याण की भावना भी निहित थी।

13. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय

ऋग्वेद के अनुसार, हमें सब ओर से अपराजित समुन्नतकारक, शुभ, सुंदर तथा कल्याण कारक भावनाओं की उपलब्धि हो, इस उत्तम विचारधारा से हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति ओत-प्रोत है। सभी के हित व सुख के लिये प्रयासरत् रहना भारतीय जीवन शैली का एक रूप है। जब हम किसी दुखी प्राणी की सहायता कर उसे सुखी करते हैं, तो हमारा स्वयं के कल्याण का मार्ग भी स्वतः प्रशस्त हो जाता है।

14. आत्मनो मोक्षा धर्म जगत हिताय च

भारतीय संस्कृति एक असीम विशाल संरचना है, ऋग्वेद के अनुसार मनुष्य जीवन के दो लक्ष्य बताये गये हैं, सदा शुभ कार्यो एवं उत्तम विचारों द्वारा स्वयं को मोक्ष (लक्ष्य प्राप्ति) एवं संपूर्ण जगत का कल्याण करना, इस प्रकार स्वयं के व जगत के कल्याण से मनुष्य परम लक्ष्य तक पहुँच सकता है।

15. सोऽहम्

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में सोऽहम् का विशेष महत्व है, इससे मानव जीवन के मूल्यों को समझने में सहायता मिलती है, इसके अनुसार जीव स्वयं ब्रह्म रूप ही है, अतः जब कोई अवसाद ग्रस्त होकर दूसरों के जीवन, सम्मान अथवा धन की हानि पहुँचाता है अथवा स्वयं के साथ ऐसा करता है, तो वह साक्षात् ब्रह्म को कष्ट देता है, क्योंकि परमपिता परमेश्वर स्वयं आदि शक्ति के रूप में सभी प्राणियों में स्थित हैं अर्थात् जीव उसी ब्रह्म का एक अंश है। अतः

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

स्वयं को परमात्मा का रूप जानकर अवसाद से दूर रहकर मनुष्य स्व कल्याण के साथ ही विश्व कल्याण भी कर सकता है।

16. एकला चलो रे

प्रस्तुत पंक्तियां रविन्द्र नाथ टैगोर जी के द्वारा रचित हैं, इनके अनुसार यदि कोई तुम्हारी पुकार पर न आये तो अकेले ही लक्ष्य की ओर बढ़े चलो। रविन्द्र नाथ टैगोर एक विश्व विख्यात कवि, साहित्यकार, कहानीकार, संगीतकार, नाटककार, निबंधकार, और दार्शनिक थे, उन्हें “नोबेल पुरस्कार” से सम्मानित किया गया है।

रविन्द्र नाथ टैगोर ने अकेलेपन को मनुष्य के लिये अवसाद का नहीं बल्कि उत्कर्ष के अवसर के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार यदि कोई आपसे बात न करें, सभी आपसे मुँह मोड़ लें तो तुम अपनी बात अपने मन से ही कहो, यदि सब राह से लौट आयें और आप पर गौर न करें तो अकेले ही अपने पैरों में चुभे कांटे निकालकर अपने लहु को स्वयं ही धो लो। (अपनी मुसीबतों का स्वयं डटकर मुकाबला करो) यदि सब आपको देखकर अपने द्वार बन्द कर लें तो अपने हृदय की बज्र अग्नि से अपना पथ प्रशस्त करो।

टैगोर जी ने किसी भी परिस्थिति में मनुष्य को साहस, धैर्य एवं आशा की किरण का साथ न छोड़ने का आवाहन किया है। जब आप अकेले लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं तब जनसमूह आपके साहस एवं उत्कर्ष को देखकर स्वतः आपके साथ हो जाता है। अतः अकेले रह जाने पर भी अवसाद ग्रस्त अथवा निराश नहीं होना चाहिये। “जहाँ चाह वहाँ राह” के पथ पर चलते हुये जब आप ब्रह्म की ओर एक कदम बढ़ाते हैं तो चाहें कोई आपका साथ न दे तो वह परमशक्ति परमात्मा अधरे में रोशनी की किरण के रूप में कोई न कोई सहायता अवश्य उपलब्ध करा देते हैं। जरूरत है तो बस आपके चलने की तथा लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने की।

17. स्वान्तः सुखाय

स्वान्तः सुखाय का अर्थ है अपने आत्म आनन्द के लिये कार्य करना, यहाँ पर आत्मआनन्द से अर्थ है अपनी रुचि के अनुसार ऐसा कार्य करना जो स्वयं

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

को सुख एवं संतुष्टि प्राप्त करने के साथ ही औरों के लिये भी कल्याणकारी हो।

प्रायः मनुष्य उन्हीं कार्यों को करते हैं जिससे समाज में उन्हे प्रशंसा मिले भले ही इसके लिये उनकी आत्मा अथवा उनका मन दबाबग्रस्त हो। उदाहरण के लिये कोई कलाकार किसी चित्र को इस प्रकार बनाना चाहता है कि लोगों को वह अच्छा लगे, लेखक, पुस्तकों को पाठकों की रुचि के अनुसार लिखना चाहता है, विद्यार्थी वहीं विषय पढ़ना चाहता है जिससे उसे भविष्य में नौकरी प्राप्त कर सकें, संगीतकार वहीं गाना चाहता है जिससे श्रोता आनन्दित हो। ऐसे में यह सब समाज, परिवार, रोजगार के दबाव में वह कार्य कर रहे हैं, जिससे उन्हे लाभ तो मिलता है, परन्तु आत्मिक संतुष्टि नहीं मिलती है। ऐसा तात्कालिक लाभ भविष्य में बड़े अवसाद को जन्म दे सकता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने जब रामचरित मानस की रचना की तब उनका उद्देश्य यही था—स्वान्तः सुखायरघुनन्दनस्य कथा। वे ना तो श्रोताओं का और न ही स्वयं रघुनन्दन को प्रसन्न करने के लिये रचना कर रहे थे, वे तो भक्ति के आत्मिक आनन्द सागर में डूबे अपने सुख के लिये “रामचरित मानस” की रचना कर रहे थे, जिस ग्रन्थ ने भविष्य में इन्हे और इनकी भक्ति को “अमर” बना दिया।

18. एकोहम् द्वितीय नास्ति !

न भूतो ना भविष्यति!

यह अद्वैत वेदान्त उपनिषद् के ऋषियों व ब्रह्म ज्ञानियों की सनातन घोषणा “अहम् ब्रहास्मि” की व्याख्या है। कुछ लोग इसे महा ज्ञानी रावण की तो कुछ लोग शिव जी आदि की रचना मानते हैं।

इसका तात्पर्य है, कि प्रत्येक मनुष्य का पृथक-पृथक अस्तित्व है अर्थात् वह एक ही है, ना तो उस जैसा भूतकाल में कोई हुआ है और ना ही भविष्य काल में कोई होगा। सभी में कोई न कोई विशेषता होती है। परन्तु फिर भी मनुष्य दूसरों से अपनी तुलना करके दुखी रहता है।

इस कथन का तात्पर्य है कि जिस प्रकार प्रत्येक फल का स्वाद अलग-अलग होता है, प्रत्येक पुष्प की सुगन्ध अलग-अलग होती है उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य एक-दूसरे से भिन्न है तथा अपने आप में सम्पूर्ण है एवं

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

कोई न कोई विशेषता लिये हुए है, अतः मनुष्य को अपने गुणों को विकसित करके स्वयं एवं मानव कल्याण हित, निहित होना चाहिये, दूसरों से स्वयं की तुलना करके कष्ट ही प्राप्त होगा। स्वयं की मेहनत, आत्मविश्वास एवं आत्मबल के बल पर मनुष्य कठिन से कठिन परिस्थितियों पर भी विजय प्राप्त कर सकता है।

19. चंदन एवं तिलक लगाने से सकारात्मकता का विकास—

मनुष्य के मस्तक पर दोनों भौहों के बीच में आज्ञा चक्र की स्थिति बताई गई है, इसे कहीं-कहीं तीसरा नेत्र भी बताते हैं, इस स्थान पर चन्दन अथवा रोली से प्रतिदिन तिलक लगाकर अभिषेक द्वारा मनुष्य में सकारात्मकता का संचार होता है जिससे मनुष्य अवसाद ग्रस्त होने से बचा रहता है।

हिन्दु धर्म में महिलायें विशेष कर सुहागिन स्त्रियों के लिये इस स्थान पर बिन्दी लगाना अनिवार्य है परन्तु वर्तमान समय में महिलायें चन्दन तथा रोली की बिन्दी ना लगाकर स्टीकर वाली बिन्दी लगा लेती हैं, जोकि धार्मिक दृष्टि से वह प्रभाव नहीं उत्पन्न करती जो चंदन तथा रोली की बिन्दी का है।

पुरुषों के लिये भी चंदन तथा रोली का टीका सकारात्मकता बढ़ाने वाला है, शुभ कार्यों में तो यह पुरोहित के द्वारा अथवा घर के बुजुर्गों द्वारा अनिवार्य रूप से लगाया जाता है, परन्तु यदि प्रतिदिन पूजा के उपरान्त टीका लगाया जाये तो यह विशेष शुभप्रद सिद्ध होता है।

प्रायः टीका अंगुष्ठ द्वारा लगाया जाता है। परन्तु यदि उँगली से लगा रहें हैं तो मध्यमा से अपने एवं तर्जनी उँगली से देव प्रतिमाओं के टीका लगाया जाता है। टीका लगाने के मन्त्र निम्न प्रकार हैं—

चंदन का टीका लगाने का मंत्र—

ॐ चंदनस्य महापुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।

आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिष्ठति सर्वदा।।

रोली का तिलक लगाने के मंत्र—

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

1. आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवा मरुदगणः ।
तिलकं प्रयच्छन्तु धम्मकामार्थं सिद्धये ॥
2. ॐ अम्बे, अम्बिके, अम्बालिके न मानयति कश्चन ।
ससस्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥
3. ॐ देहि सौभाग्य आरोग्यं देहि में परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥
4. ॐ जयन्ति मंगला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥
5. ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः ।
स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः ।
स्वस्ति नो बृहस्पतिः दधातु नः ॥

इस प्रकार उपरोक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का सविधि उच्चारण करके तिलक लगाने से मनुष्य में सकारात्मकता का संचार होता है।

निष्कर्ष

अतः उपरोक्त शोध पत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण है। मानव जीवन का महत्व इसी में है कि वह सद्कार्य करें। जिस प्रकार जब कोई फूल खिलता है, तब उसकी खुशबू चारों फँस जाती है, इसलिये नहीं कि कोई उसका गुणगान करें अपितु यह तो स्वभाव है। इसी प्रकार मानव जीवन मूल्य को समझकर कोई भी यह कार्य को केवल प्रशंसा की लालसा से नहीं करना चाहिये, बल्कि इसलिये करना चाहिये

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

कि वह करने योग्य है, तथा सब के लिये सुखदायक है, फिर मनुष्य जो भी कार्य करेगा, वह उसके लक्ष्य को आनन्द से भर देगा।

एक स्थिर बुद्धि (सादगी से भरा जितेन्द्रिय मनुष्य) जान लेता है कि प्रसन्नता जीवन का स्वभाव है।

मानव जीवन मूल्य इतने महान है कि मनुष्य केवल इसी कारण से प्रसन्ना रह सकता है कि वह जीवित है और सद्कार्य में लगा हुआ है। जिससे वह स्वयं तथा सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण कर सकता है। “गुण ग्राहक” बनने से मनुष्य के बीच वैमनस्य की भावना का समापन हो जाता है, तथा वह दूसरों की बुराई न देखकर उसकी अच्छाईयों को ग्रहण कर स्वयं को उत्कर्ष करते हुये समाज के, देश के एवं विश्व के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

वर्तमान त्रासदी काल जिसे कोरोना काल के नाम से भी जाना जा रहा है, विश्व की अधिकांश मानवजाति अवसाद के घेरे में घिर रही है। इस महामारी काल में विश्व को विभिन्न प्रकार के आर्थिक, सामाजिक एवं भावनात्मक संकटों से जूझना पड़ रहा है। वर्तमान समय में करोड़ों लोगों के रोजगार जाने के साथ ही आवागमन के साधनों में कठिनाई के कारण लोग अपने आत्मीय जनों से भी दूर रहकर एवं स्वास्थ्यगत कारणों (संक्रमण से बचाव) से भी सामाजिक दूरी बनाने को मजबूर लोग विशेषकर युवा पीढ़ी अवसादग्रस्त होकर आत्मघाती कदम उठाने का निर्मम फैसला कर बैठती है।

ऐसे में उपरोक्त प्राचीन भारतीय परंपरा एवं संस्कृति से ओत-प्रोत सुविचारों को अपनाने से मनुष्य शत-प्रतिशत अपने जीवन मूल्यों को समझकर अपने जीवन को सकारात्मक एवं ऊर्जावान बनायेगा।

The Expression: An International Multidisciplinary e-Journal

(A Peer Reviewed and Indexed Journal with Impact Factor 3.9)

www.expressionjournal.com

ISSN: 2395-4132

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद् भगवत गीता
2. श्री विष्णु पुराण
3. कल्याण पत्रिका
4. भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति डा० आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव
5. यर्जुवेद (हिन्दी अनुवादित)
6. शिव संहिता
7. भागवत् पुराण
8. गरुण पुराण
9. गूगल से साभर संकलित स्वयं (इण्टरनेट द्वारा)
10. विभिन्न समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं से आभार संकलन
11. प्रवाहजनों के प्रवचनों एवं सुविचारों से प्रेरणा स्रोत